स्वामी हरिदास

भक्त चरितामृत के अनुसार स्वामी हरिदास का जन्म सन 1537 के भादो मास में (सन 1480 ईस्वी) जन्माष्टमी को हुआ था जो सारस्वत ब्राह्मण थे। उनके पिता का नाम आशुधीर तथा माता का नाम गंगा देवी था। दोनों धार्मिक स्वभाव के और साधु संतों के बड़े भक्त थे। स्वामी हरिदास में बाल्यकाल से ही ईस्वर भक्ति की भावना जागृत हुई। उन्होनें 25 वर्ष की अल्पायु में ही सन्यास ले लिया। कुछ समय बाद वे वृन्दावन चले गए और निधिवन निकुंज में कुटिया बनाकर रहने लगे। जीवन की कम से कम अवश्यकताओं की पूर्ति उन्हें अधिकतम संतोष देती थी। वे बस ईस्वर की आराधना और संगीत साधना में लगे रहते। कुछ संगीत ग्रंथों में हरिदास को नाद ब्रह्मयोगी कहा गया है। कहते हैं कि स्वामी जी ने नाद के माध्यम से ब्रह्म का साक्षत्कार कर लिया था।

स्वामी हरिदास के जीवन के विषय में बहुत कम सामग्री प्राप्त होती है। कारण यह है कि उन दिनों कोई साहित्यकार व संगीतज्ञ अपने विषय में कीच लिखना पसंद नहीं करता था। अत: स्वामी जी की जन्मतिथि और जन्मस्थान ने बारे में बहुत मतभेद है। एक मतानुसार उनका जन्म पंजाब

Scanned with CamScanner

के मुल्तान अथवा होशियारपुर अथवा हरियाणा के किसी गाँव में हुआ था। कुछ लोगों के विचार से उनके पूर्वज पंजाब के अवश्य थे, किन्तु उनका जन्म उत्तरप्रदेश के अलीगढ़ जिले में खेरेश्वर महादेव के समीप हुआ था और उनके नाम से हरिदासपुर ग्राम बस गया।

स्वामी हरिदास अपनी कुटिया छोड़कर कहीं नहीं जाते थे। तानसेन के द्वारा अकबर रोज उनकी प्रशंसा सुना करता था। अत: उसके मन में हरिदास जी का गायन सुनने की तीव्र इच्छा हुई। वे तानसेन के साथ वृन्दावन गए और स्वामी जी की झोपड़ी के निकट एक झाड़ी में छिपकर बैठ गए। तब तानसेन ने स्वामी जी के सामने जानबूझकर एक ध्रुपद को अशुद्ध गाना प्रारम्भ किया तो स्वामी जी ने आश्चर्य में आकर तानसेन को डाटा और उसका शुद्ध रूप उनको सुनाया। बाहर छिपे बादशाह अकबर उनका गायन सुनकर आत्मविभोर हो गए। अपने गायन के पश्चात स्वामी जी ने तानसेन से कहा कि तुमने छल से मेरा गायन सम्राट अकबर को सुनवाया है यह अच्छा नहीं किया। ख़ैर अब जाओ और बादशाह को यहां बुला लाओ। कहते हैं कि अकबर उनके गायन से ऐसे आत्म विस्मृत थे कि उसने जाकर स्वामी जी के चरण पकड़ लिए।

स्वामी जी गायन के अतिरिक्त वादन में भी पारंगत थे। उत्तर भारत में जो कुछ भी संगीत आज हमें मिलता है, वह

Scanned with CamScanner

किसी न किसी रूप में स्वामी जी से समन्धित है। स्वामी जी की मृत्यु 95 वर्ष की अवस्था में संवत 1634 में हुई। वृन्दावन में प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ल अष्टमी को प्रतिवर्ष हरिदास जयंती मनाई जाती है। कहा जाता है कि स्वामी हरिदास के शिष्य तानसेन, बैजुबाबरा, रामदास, दिवाकर, मदन राय, गोपाल लाल, सोमनाथ तथा राजा सौरसेन थे, किन्तु तत्कालीन किसी भी साहित्य में तानसेन और बैजू बावरा को स्वामी जी का शिष्य होना नही मिलता। तानसेन की रचनाओं में कहीं भी स्वामी हरिदास की भक्ति भावना का दर्शन नहीं होता, इसलिए ऐसा मालूम परता है कि एक से अधिक तानसेन हो चुके हैं। स्वामी हरिदास का जन्म ऐसे काल में हुआ था जब भारतीय संगीत अस्तप्राय हो रहा था, किन्तु स्वामी जी ने ही उसमें पुनः प्राण प्रतिष्ठा की। उन्होनें धमार, त्रिवट और चतुरंग की भी रचना की। संगीत कल्पद्रुम में उनकी अनेक रचनायें मिलती है।

----------/----------////----------/////------

Scanned with CamScanner